अण्णा भाऊ साठे

व्यक्ती, साहित्य आणि समीक्षा

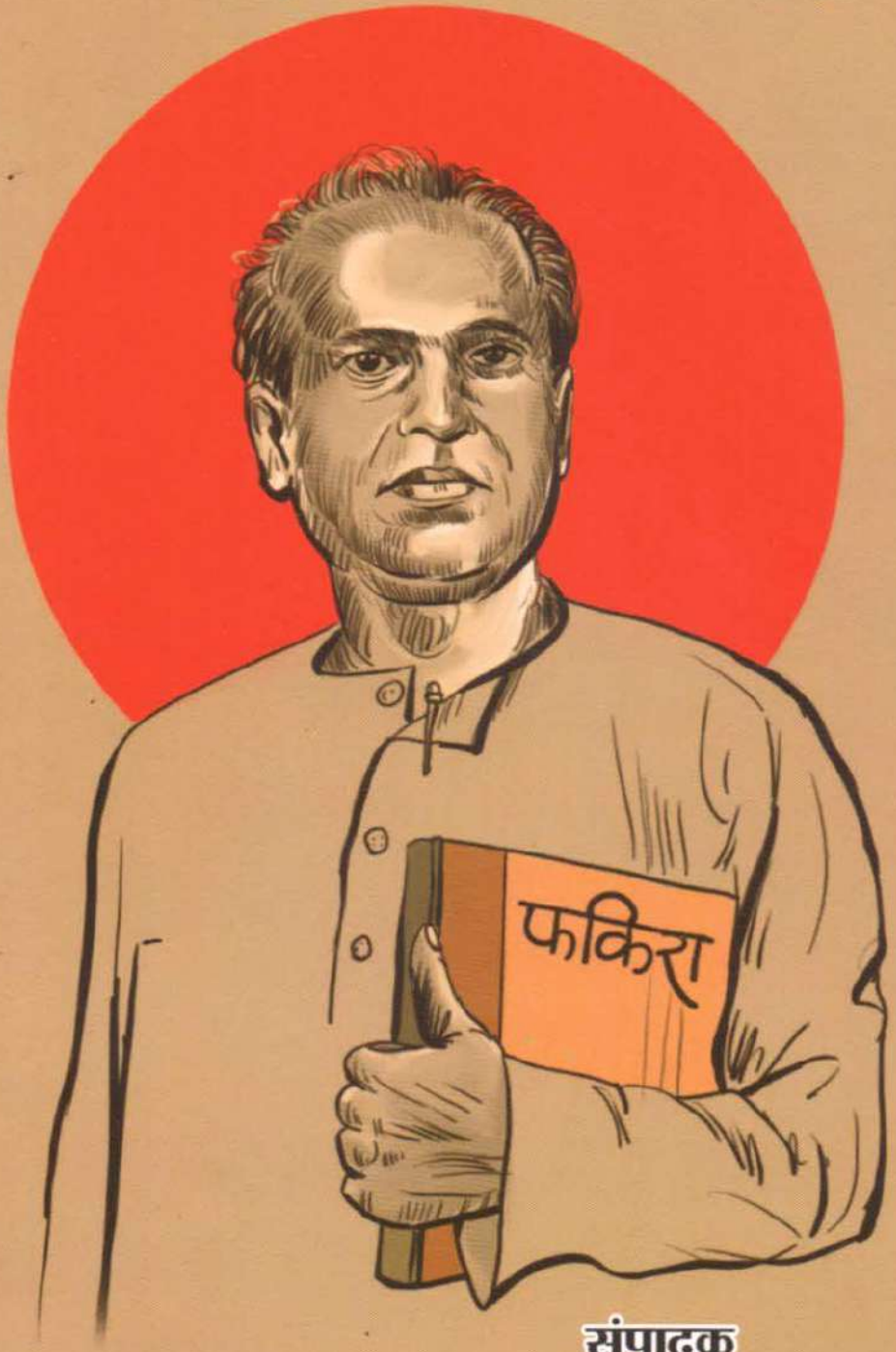

संपादक

डॉ. राजकुमार मस्के

डॉ. लहू वाघमारे

युगप्रवर्तक प्रकाशन

अण्णा भाऊ साठे : व्यक्ती, साहित्य आणि समीक्षा
(Anna Bhau Sathe : Vyakti, Sahitya aani Sameeksha)

संपादक :
डॉ. राजकुमार मस्के
शिवालय, बीदर रेल्वे गेटच्या पूर्वेस, साई नगर, उदगीर, मो.: ९८९०५९६२५५
डॉ. लहू वाघमारे, सुभेदार रामजी नगर, लातूर, मो.:९८२३८२७४३८

प्रकाशक :

© युगप्रवर्तक प्रकाशन

बाभळगाव, ता. जि. लातूर-४१३ ५३१ भ्र.: ९३७३८५४४१६

मुद्रण, अक्षरजुळणी :
विश्व ऑफसेट प्रिंटर्स, बाभळगाव, ता. जि. लातूर-४१३ ५३१
भ्र.: ७०५८८४८६४८

मुद्रित शोधन :
डॉ. लहू वाघमारे

मुखपृष्ठ : शिवाजी हांडे, ९९६००६५५११

आवृत्ती पहिली : डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जयंती, १४ एप्रिल २०१९

ISBN : ९७८-८१-९३७४७७-०-४

मूल्य : ₹ ६००/-

*प्रस्तुत ग्रंथातील लेखकांच्या मताशी संपादक, प्रकाशक सहमत असतीलच असे नाही.

संपादक मंडळ

अतिथी संपादक
यशवंत मनोहर

संपादक
डॉ. राजकुमार मस्के
डॉ. लहू वाघमारे

सह संपादक

डॉ. जयद्रथ जाधव — **डॉ. मारोती कसाब**
प्रा. अमोल पगार — **डॉ. दुष्यंत कटारे**

कार्यकारी संपादक
डॉ. चंद्रकांत वाघमारे
डॉ. नारायण कांबळे

संपादक मंडळ

डॉ. गणेश चंदनशिवे — डॉ. ओमशिवा लिगाडे
डॉ. सुशीलप्रकाश चिमोरे — डॉ. सा. द. सोनसळे
डॉ. सोमनाथ कदम — डॉ. अरविंद कदम
डॉ. ममता इंगोले — प्रा. आरती गायकवाड
प्रा. नयन राजमाने — प्रा. रवींद्र बोरसे
डॉ. पद्माकर पिटले — डॉ. संजय कसाब
डॉ. संतोष हंकारे — श्रीमती मधुबाला हुडगे
डॉ. मारोती गायकवाड — सौ. नीता मोरे

ISBN : 978-81-937477-0-

अ.क्र.	लेख / लेखकाचे नाव	पृष्ठ
९७	वेदनांना अर्थ देणारा साहित्यिक : अण्णा भाऊ साठे प्रा. प्रदीप मारुती लंजीले	६३१-६३५
९८	अष्टपैलू व्यक्तिमत्त्व : अण्णा भाऊ साठे प्रा. विलास देवराव कुडमते	६३६-६४२
९९	लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे : एक साहित्यरत्न डॉ. धीरज कोतमे	६४३-६४७
१००	अण्णा भाऊंची शाहिरी : लोकप्रबोधनाची चळवळ डॉ. केशव अलगुले	६४८-६५२
१०१	अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील पात्रचित्रण भिमाशंकर सूर्यवंशी	६५३-६५६
१०२	अण्णा भाऊ साठे यांचे साहित्य : एक शोध डॉ. राजकुमार मस्के	६५७-६६५
१०३	अण्णा भाऊ साठे : मराठी साहित्यविश्वातील 'अढळतारा' प्रा. एस. आर. हावळे	६६६-६७१
१०४	अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील समता डॉ. पद्माकर पिटले	६७२-६७८
१०५	अण्णा भाऊ साठे यांच्या साहित्यातील विचारांची प्रासंगिकता डॉ. कैलास पाळणे	६७९-६८०
१०६	अण्णा भाऊ साठे : एक संघर्षशील व्यक्तित्त्व डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे	६८१-६८५
१०७	अण्णा भाऊ साठे के उपन्यासों में 'नारी चित्रण' प्रा. कु. अर्चना शरदराव कांबळे	६८६-६९१
१०८	अण्णा भाऊ साठे का जीवन संघर्ष प्रा. नयन भादुले-राजमाने	६९२-६९८
१०९	Anna Bhau Sathe's Fakira : A Symbol of Social Humanism Ravindra Ramdas Borse	६९९-७०२
११०	The Great Literature and Philosopher : Anna Bhau Sathe Miss. Vidhya Gokul Narwade	७०३-७०५
	उत्तम कांबळे (बॅक पेज मलपृष्ठ)	

ISBN : 978-81-937477-0-4

१०८

अण्णाभाऊ साठे का जीवन संघर्ष

प्रा. नयन भादुले-राजमाने
गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी रात्रीचे वाणिज्य महाविद्यालय,लातूर

अण्णाभाऊ साठे याने तुकाराम भाऊ साठे। महाराष्ट्र के सांगली जिले के दलित मातंग समुदाय से वे थे। अपनी जाति और गरीबी के कारण वो बचपन में पढ़ाई नहीं कर पाए। जाति-पाँति का भेदभाव इतने कम उम्र में भी उनसे बर्दाश्त नहीं हुआ। तथा सुखे के कारण वे ११ साल की उम्र में अपने परिवार के साथ मुंबई आ गये। मुंबई आने पर वे परिवार के साथ घाटकोपर के चिराग नगर की एक चाल में रहने लगे। उसके मुंबई में भायखल्या के चांदबीबी चाल में रहेने का संदर्भ भी कहीं कहीं पर मिलता है।

अण्णाभाऊ साठे का जन्म १ अगस्त १९२० को सांगली जिले के वाँटेगाँव में मांग जाति में हुआ। इनके पिता का नाम भाऊराव और माता का नाम बालूबाई था। हिंदू वर्णाश्रम धर्म के अनुसार मांग जाति के लोगों का कार्य गाँव की पहरेदारी करना होता था। उनके घरों की दीवारों पर तलवारे लटकती रहती थी मगर, घर में खाने को नहीं रहता, अण्णाभाऊ की जिंदगी भी इससे अलग नहीं थी। मुंबई में खाली पेट घुमते हुए उन्होंने हमाल, बुट पॉलिशवाला, किसी के घर में काम किया। हॉटेल बॉय, कोलसा वाहक के रुप में, डोअर किपर, कुत्तो को संभालनेवाला, बच्चों को संभालनेवाला, खाण में काम करनेवाल, ड्रेसिंगबॉय इस तरह के कष्टप्रद काम किये। इससे उनके जीवन संघर्ष का चित्र हमारे सामने खड़ा हो जाता है।

चुनोंतियों को स्विकार कर कठिण परिस्थितियों से झुँझते हुऐ वे आगे बढ़ते रहे। उनके साथ साम्यवादी विचारों को साथ में लेते हुए काम करनेवाले शाहीर अमर शेख, शाहीर गव्हाणकर आदि लोग थे। शाहीर गव्हाणकर के साथ काम करते करते उन्होंने 'लालबावटा कलापथक'की मुंबई में स्थापना की। इसी साल बंगाल में आकाल स्थिती उत्पन्न हुई। गाँव ड्ड गाँव में कामगार मजूर लोग भूक की वजह से मर रहे थे। उन कठिण परिस्थितीयों में उन लोगोंके लिए पैसा जुटाने के उद्देश्य से मुंबई के प्रसिध्द बंगाली कलाकारोंने इप्टा (इंडियन पीपल्स थियटर ॲकेडमी) इस नाम से कला संस्था

ISBN : 978-81-937477-0-4

की स्थापना की। इसमें प्रेमधवन, शैलेंद्र, बलराज सहानी, ए.के. हंगल आदि साम्यवादी कलाकार थे। एक विचार से चलनेवी 'इप्टा' व 'लालबावटा' इन संस्थाओंने बंगाल मदतनिधी के लिए पहला कार्यक्रम नाना चौक, ग्रँड रोड परिसर में लेने का तय किया। इस कार्यक्रम में अण्णाभाऊनें बगालची हाक नाम से उन्होंने पहिली बार लिखा हुआ पोवाडा पेश किया। इस कार्यक्रम से उन्होंने अपने वीर शाहिरी कर्तृत्व का शुभारंभ किया और उस कार्यक्रम से अण्णा लोकशाहीर हो गये। कम्युनिष्ठ पार्टी में सदस्य के रुप में रहकर लाल बावटा कलापथक द्वारा वे लोगोंतक विचार पहुँचाने का काम करते थे। लेकिन जब उन्हें पता चला की चीन कम्युनिष्ठ होकर भी भारत पर शस्त्र उठा रहा है तो वे ये बात सह नहीं पाये। और उन्होंने कम्युनिष्ट पक्ष को त्यागपत्र दे दिया।

डॉक्टर एक समय पर एक ही बीमार की नस को जाँचता है लेकिन शाहीर जो होता है वह पूरे समाज की नस को पहचानता है। वह केवल उसका कारण ही नहीं बताता तो साथ-साथ सही मायनो में इलाज भी करता है। जुलमी साहूकार और व्यापार के माध्यमसे कालेधन कमानेवाले लोग इनके बीच पिसे जाने वाले महाराष्ट्र के लोगों के समस्याओं को अण्णा ने समझा, जाना और अपने पोवाडे के माध्यमसे उनपर बड़ी मार्मिकता से प्रहार किया। वेदपुराणों का पठण जब देवालय में होता था तो वह शब्द अगर गलतिसे भी दलित लोगों ने सुन लिए तो उनके कानो में उबलता हुआ तेल डाला जाता था। क्योंकि धार्मिक बंधनों के कारण वे

'वेदवाणी' नहीं सुन सकते थे। इस समय यह शुद्र लोग गाँव के बाहर अपनी झोपडी में डफ के साथ अपनी शाहीरी गा कर अपने दुख को वाणी दे रहा था। अस्पृश्य लोगों को शाहिरी यह बहोत ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कला विरासत में मिली है। यही परंपरा से चली आनेवाली यह शाहिरी अण्णाभाऊ ने जनप्रबोधन के लिए हत्यार के रुप में पेश की। अण्णाभाऊ जैसा बहुआयामी व्यक्तिमत्व सिर्फ शाहिरी तक ही नहीं रुका उनके विचारों के आयाम बढ़ते गये और वे अब साहित्य के और विधाओं के द्वारा अपनी विचारों के व्यक्त करने लगे।

सन १९४४ में टिटवाळा में उन्होंने किसान परिषद में शाहीर गव्हाणकर और अमर शेख के साथ इन विचारों को रखा, वे कहते है-

तू मराठ मोळा शेतकरी घोंगडी शिरी
जुनी ती काठी, लंगोटी
बदल ही दुनिया सारी रे
तू खाशी कांदा भाकरी बसुनी अंधारी
भुकेला कोंडा, निजेला धोंडा बदल ही दुनिया सारी।।१।।

ISBN : 978-81-937477-0-4

साहूकार ने परेशान किया या समाज व्यवस्था की ओर से किसान आहत हुआ तो वे उसे ये सब कुछ बदलने की प्रेरणा अपने शाहिरी से देते है।

अण्णाभाऊ ने शाहीरी में विषमतावादी व्यवस्था का विरोध किया। कामगारों का शोषण करनेवाले भांडवलशाही के विरोध में आवाज उठाई। उनकी दमदार शाहीरी का यह नमुना बहोत ही सराहनीय है...

''बा महाराष्ट्रा , हो जागा झुगारुन निद्रा
महाविदर्भ, गोवा, मराठवाडा सारा
सांधुनी देश हा तीन कोटींचा प्यारा,
ने पुढे थोर परंपरा''

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन, संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन और गोवा मुक्ति आंदोलन के दौरान सामाजिक जागरण की ओर काफी योगदान दिया। कलाकार के रुप में हर कार्यक्रम और विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। उनकी लावणी, पोवाडा लोक कला की पृष्ठभूमि थी। १९४५ में साप्ताहिक 'लोकयुध्द' के लिए एक पत्रकार के रुप में काम करते हुए वह बेहद लोकप्रिय बने। उन्होंने आम आदमी के दुख के बारे में विशेष रुप से लेखन किया। १९४९ में अण्णा ने पहली कथा लिखी। श्रीकृष्ण पोवाळेजीने वह अपने दिवाली अंक में छपवाई थी। अखबार में काम करते करते उन्होंने अक्कलेची गोष्ट, खापऱ्या चोर, माझी मुंबई जैसे नाटक लिखे। १९५० ते १९६२ के बीच उनके अनेक उपन्यास भी प्रकाशींत हुए जिनमें वैजयंता, माकडाचा माळ, चिखलातील कमल, वारणेचा वाघ, फकीरा, शामिल है। उनकी लाल बावटा (बामपंथी कला मंच) और तमाशा पे इसी वक्त सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया था। जिसके बाद वो इन्हें लोक गीत में तबदील कर दिए और प्रतिबन्ध के कोई मायने न रहे।

अण्णाभाऊ साठे की लिखी बहुचर्चित छक्कड (लावणी का एक प्रकार) अर्थात्

''माझी मैना गावाकडं राहिली
माझ्या जिवाची होतिया काहिली।''

इस काव्य के कारण मराठी साहित्य अजरामर हो गया।

देश में उस समय अंग्रेजी राज्य के खिलाफ जबरदस्त आन्दोलन हो रहे थे। अण्णाभाऊ ने सन १९४७ के दौरान नाना पाटील आदि क्रांतिकारियों के साथ अंग्रेजों के विरुध्द बगावत में डटकर भाग लिया था। उस समय वे कम्युनिस्ट पार्टी के साथ जुड़े थे। उस वक्त उनके जिम्मे पार्टी का प्रचार कार्य था। अण्णाभाऊ दलित-शोषितों के बीच एक लोकप्रिय जन-कवि के रुप में प्रसिध्द थे। वे अपनी क्रांतिकारी शाहीरी के बीच जब हँसी -मजाक की बातें करते तो सभी लोगों के हँसी के फव्वारे छूटते थे। उन्होंने अपने

ISBN : 978-81-937477-0-4

साहित्य से दलित शोषितों को एक राह दिखाई थी। अण्णाभाऊ के क्रांतिकारी काव्य की शोहरत रुस, जर्मनी, पोलंड आदि देशों तक पहुँची थी। मराठी के ग्रामीण, प्रादेशिक, दलित साहित्यपर अण्णाभाऊ का प्रभाव था। उनके साहित्य के हिंदी, गुजराती, उड़ीया, बंगाली, तमीळ, मल्याळी इन भारतीय भाषाओं के साथ साथ रशियन, झेक, पोलिश, इंग्रजी, फ्रेंच ऐसी विश्व की २७ भाषाओं में अनुवाद हुआ है। लेखनी को हत्यार बनाके उन्होंने पुरोगामी, विज्ञाननिष्ठ, स्त्रीवादी, लढाऊ प्रवृत्ती का दीपस्तंभ मराठी साहित्य के क्षेत्र में खड़ा किया। फिल्म इंडस्ट्रि के लोगो में भालजी पेंढारकर, सूर्यकांत मांढरे, जयश्री गडकर, सुलोचना इन बड़े लोगों के अण्णा के साथ बहोत अच्छे संबंध रहे। हिंदी फिल्मों के राजकपूर, शंकर, शैलेन्द्र, बलराज सहानी, गुरुदत्त, उत्पल दत्त इन कलाकारोंका अण्णापर प्रेम था। ऑलेग जैसा रशियन कलाकार भी अण्णाभाऊ का दोस्त था। हर देश में वे शोषितों के साहित्यकार के रुप में पहचानें जाने लगे थे। उन्हें उन देशों में से निमंत्रण आते थे। अण्णाभाऊ के लेखनी में वस्ताद के कुल्हाडी की तेज धार थी। फकीराके तलवार की चमक थी। महात्मा फुले के आसुड की धग थी। आंबेडकर के मानवमुक्ति रणसंग्रामकी आग थी। तथा गाडगे बाबा के थोतांड शाहीरपर कसे हुए प्रहार की वह वारिस थी। रशिया जाने का सपना व बहोत दिनों से देख रहे थे। बलराज साहनी ने १९४८ शांतता परिषद को उपस्थित रहने के लिए पॅरिस तक जाने की उनकी टिकट निकाली थी। पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्रीजी से परवाना न मिलने के कारण वे जा न सके। अण्णा भाऊ निराश हुए थे। फिर १२ साल बाद उन्हें ये अवसर मिला था। अण्णाभाऊ को इंडो-सोवियत कल्चर सोसायटी की ओर से रुस जाने का निमंत्रण मिला था। इस यात्रा का जिक्र उन्होंने अपने सफरनामा

'माझा रशियाचा प्रवास' में किया है। वे अंदर से बहोत ही विचलित हुए थे। क्योंकि अपने मातृभूमी को छोड़कर जाने का दुख भी हो रहा था। रशिया में वे 'सोव्हियट स्कायं' इस बहोत बड़े हॉटेल में ठहरे थे।

रशिया में पहुँचने के बाद उनके दुभाषि कॉ. बारनिकोव्ह ने उन्हें पूछा कल क्या देखेंगे ? तो अण्णा भाऊ ने उत्तर दिया-

'रशियातील माणसें' इस पूरे सफर में उन्हें बहोतही खुबसुरत नजारा देखने को मिला। लेकिन उनकी नजर तो रशियन पोलाद के पिछे छिपाया हुआ सच जानना चाहती थी। गरीबी, भूख, अन्याय, गुलामगिरी, समजावाद का पराभूत होना पर इनमें से कुछ नहीं हाथ आ रहा था। इस के संदर्भ वे कहते है-

''एखादी लबाड सत्ता डोंगरा एवढे सत्य लपवू शकेल परंतु तिला दारिद्रय हे लपविताच येवू शकत नाही कारण दारिद्रय फार क्रूर असते नि भग्न असते. त्याच्या खुणा

ISBN : 978-81-937477-0-4

माणसाच्या मनावर, ह्रदयावर, चेहऱ्यावर सुध्दा उमटलेल्या दिसतात. त्या दडणे शक्यच नाही. शिवाय दारिद्र्याच्या खुणा माणसाच्या मनावर, ह्रदयावर, चेहऱ्यावर शुध्द उमटलेल्या असतात. त्या म्हणजे कपड्यावरती जुनी ठिगळं, फाटक्या कपड्यांना घातलेल्या टाके ह्या होत. मला वाटते या खुणा कोणीच दडवू शकणार नाही.'' दरिद्रता, कंगाली के उपकर का उनका यह भाष्य, तत्वज्ञान उनके अंतर्मन को दर्शाता है।

वाटेगाँव से मुंबई तक २२७ मील गरीबी की वजह से पैरों में चप्पल न पहनते हुए किया गया सफर, और अब वाटेगाँव से मॉस्को व्हाया मुंबई यह अण्णा भाऊ के जिंदगींका अनोखा पल किसी और के जिंदगी में कहाँ आया होगा।

जो लोग जाती, धर्म, पंथ, रुढी, परंपराओं में तथा शोषकों के गुलामी में अटके हैं उन्हें मुक्त करनेवाले डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों के वे प्रशंसक थे। उनके निधन पर अण्णाभाऊ ने लिखा था ...

''जग बदल घालूनी घाव, सांगुनी गेले भीमराव
गुलामगिरीच्या चिखलात, रुतूनी बसला एरावत
अंग झाडुनी निघ बाहेरी, घे बिनीवरती घाव।''

सन १९५९ में अण्णाभाऊ ने 'फकीरा' ये किताब लिखी, जो काफी मशहुर हुई। इस किताब के माध्यम से अंग्रेजों के खिलाफ बगावत की कलम उठाई थी। ४० के ऊपर उपन्यास, ३०० के आस-पास कहानियाँ, ३ नाटक, १३ कहानीसंग्रह, १४ लोकनाट्य, १० प्रसिध्द पोवाडे, १२ उपहासात्मक लेख, काव्य संग्रह इतनाही नहीं उन्होंने कई चित्रपट कथाएँ भी लिखी। इतना ही नहीं तो हिंदी सिने-जगत में भी उनकी १० से अधिक कहानियों पर फिल्मे बनी। जिसमें 'फकीरा' भी है। इसमें उन्होंने 'सावळ्या' का किरदार भी बड़ी अच्छी ढंग से निभाया था।

फिल्मों और विज्ञापनों के पोस्टर देखकर ही उनसे उन्होंने अपने आप को पढ़ाया। अपना कैरियर एक मिल मजदूर के रुपमें शुरु किया घरना, बैठकों, सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शन की रोमांचक राजननीतिक जीवन का अनुभव करने के बाद वो एक तमाशा मंडली में शामिल हो गए।

अण्णाभाऊ की तेज आवाज, हारमोनियम, तबला, ढोलकी, बुलबुल, की तरह विभिन्न उपकरणों खेल में अपने कौशल, तमशा की दुनिया में उन्हें स्टार बना दिया। क्योंकि खुद वो बहोत समय तक मजदूरी किया करते थे। इसलिए उनकी बातें और सोच हमेशा समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचती थी।

भारत को जिस तरह से स्वातंत्र मिला था वह उन्हें नहीं भाँता था। इस कारण उन्होंने १६ अगस्त १९४७ को मुंबई में २०,००० लोगों का जुलूस निकाला था। उस

ISBN : 978-81-937477-0-4

जुलूस की घोषणा थी,

''ये आझादी झुठी है, देश कि जनता भूखी है।''

अण्णाभाऊ की माली हालात बहोत खराब थी। असत में ये कलम की शोहरत कभी उनके घर की माली हालात की हिस्सेदार नहीं बनी। वे गरीब परिस्थिती के तो थे ही, उनके दलित कलमकार और जाति-गत स्वाभिमान ने भी उन्हें अपनी जमीं से ऊपर उठने नहीं दिया। एक बार, उनके एक मित्र ने उनसे कहा ,

''अण्णा भाऊ, आपकी कई किताबों का अनुवाद देश-विदोशों में हुआ है। मास्को में आपके अनुवादित किताबों के रकम की भारी रॉयल्टी वहाँ इकट्ठा हुई होगी। आप उसे हासिल कर बड़ा -सा बंगला क्यों नही बनवा लेते ? वैसे वहाँ लिखने का कार्य जारी रख सकते है।'' इस बात पर बैठकर लिखने से सिर्फ कल्पनाएँ सूँझ सकती है। लेकिन, गरीबीका दर्द और पीड़ा भूखे पेट रह कर ही महसूस की जा सकती है । इस प्रकार के उनके विचार थे। अण्णाभाऊ के ख्यातिके साथ - साथ उनके दुश्मन भी पैदा हुए थे। ब्राम्हण तो हाथ धोकर कब के उनके पीछे पड़े थे। उनकी कविता, कहानी और नाटकों पर स्थापित राष्ट्रीय साहित्यकारों को खासी आपत्ती थी। उनके लिखे नाटकों के मंचन में भारी रुकावट पैदा हो रही थी। अंतत: अण्णाभाऊ को नाटकों से अपने को अलग करना पड़ा यह उनके लिए बड़ा आघात था। आघात इतना बड़ा था कि वे उसे बर्दास्त नहीं कर पाए और उन्होंने अपने - आप को शराब के हवाले कर दिया।

जिस शख्स के घर के सामने से शराबी जाने से डरता था, वह अब शराब का दास बन गया।

अण्णाभाऊ की दो शादियों हो चुकी थी। पहलि पत्नी कोंडूबाई। जिन्हें एक बेटा हुआ जिसका नाम मधुकर रखा गया। वे अण्णाभाऊ का साथ नहीं निभा पाई। दुसरी पत्नीका नाम जयंताबाई था। अण्णा की तरह वे भी साम्यवादी पक्ष की कार्यकर्ता के रुप में काम करती थी। शांताबाई और शकुंतलाबाई ये जयंताबाईकी थी बेटियाँ। उनकी ये दोनों बेटियाँ अण्णाभाऊ को बहोत पसंद करती थी।

अंत में लोगों की बर्ताव से तंग आकर वे विचलित हुए तथा शराब के दास बन गये। धीरे-धीरे अण्णाभाऊ मौत के मुँह में समाने लगे। उनके प्रकाशकों ने उनके साथ दगा किया। उनके अपने रिश्तेंदारों ने उनके पास जो भी था, उसे हजम कर लिया। और फिर १८ जुलाई १९६९ को यह लोक शाहिर सदा के लिए मौत के मुँह में समा गया। सोचनेवाली बात है, जो शख्स कलम के माध्यम से पिछड़े समाज को आगे ले जाना चाहता है। जन-चेतना की अलख जगाने अपनी जिन्दगी कुर्बान कर देता हो, उसके खुद्दारी की इन्तहा इस कदर क्यों होती हैं ?

ISBN : 978-81-937477-0-4

साहित्य सम्राट अण्णा भाऊ साठे वैश्विक स्तर पर अपनी विचारों, कार्यो और साहित्य के वजह से पहुँच गये फिर भी वे अपने ही देश में उपेक्षित रहें। सत्ताइस देशों में अपनी साहित्यिक प्रतिभा की वजह से पहुँचा हुआ व्यक्ति आपने भूमि में उपेक्षित क्यों है ? सोचनेवाले बात है। इस संदर्भ में आर.के. त्रिभुवनजी कहते है, ''अण्णाभाऊ वाटेगावाहून मुंबईला पायी चालत आला आणि रशियाला विमानाने गेला पण या देशात आल्यावर अन्नाला महाग झाला व भाकरीविना खाटेवर मरुन पडला.'' एक ज्येष्ठ कार्यकर्ता के रुप में काम करनेवाले आर.के. त्रिभुवनजीका यह वक्त्यवय हमें झकझोर देता है। अण्णाभाऊ का जीवन संर्घ यहाँ मुख्य रुप से स्पष्ट होता है। समाज व्यवस्था ने मातंग समाज को जिस प्रकार से दूर रखा तथा उनके उपर जिस तरह से अन्याय, अत्याचार किये इस बात पर त्रिभुवनजी करारा प्रहार करते हैं।

इस तरह से अण्णाभाऊ विचारों से जनसामान्यके जीवन में परिवर्तन लाना चाहते थे। उन्होंने अपने साहित्य में शोषित, दीन-दलित, पीडीत, वंचित, कष्टकरी, कामगार, शेतमजूर, किसान आदि की व्यथा और वेदना को केंद्र में मानकर उन्हें न्याय देने कि लिए कोशिश की। सामाजिक विषमता के विरोध में आवाज उठाई। वे जिंदगीभर संघर्ष करते रहे।श्रम संस्कृती को गौरान्वीत करते हुए वे कहते है, 'पृथ्वी ही शेषनागाच्या मस्तकावर उभी नसून दलितांच्या तळहातावरती तरलेली आहे।' अंतत: हम कह सकते है, लोकशाहीर, जननायक, निले आकाश का लाल तारा, जनवादी साहित्यिक ऐसे अनेक विध विशेषणों से उन्हें सम्मानित किया गया। ऐसे हर चुनौतियों को स्वीकारनेवाले जीगर बाज को शतश: प्रणाम।

संदर्भ :

१) महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडळ प्रकाशन, लोकशाहीर अण्णा भाऊ साठे: निवडक वाङ्मय, मुंबई- लेखक केशव मेश्राम.

२) अण्णा भाऊ साठे चरित्र आणि कार्य- विजयकुमार जोखे.

३) अण्णा भाऊ साठे यांचे पोवाडे व लावण्या, माझा भाऊ अण्णा भाऊ लेखक शंकर भाऊ साठे.

४) अण्णा भाऊ साठे आणि सामाजिक परिवर्तनाची दिशा- व्ही. एच. हनवते.

अण्णा भाऊ : माणूसकेंद्री साहित्याचा निर्माता

मराठी साहित्य माणूसकेंद्री, विचारकेंद्री, परिवर्तनकेंद्री आणि युद्धकेंद्री करण्यात जे काही अगदीच मोजके साहित्यिक आहेत, त्यात कॉ. अण्णा भाऊ साठे यांचे स्थान खूप वरचे आहे. नवा समाज आणि नवा माणूस घडवण्यासाठी अण्णा भाऊंनी आपली लेखणी आणि वाणी झिजवली. आपल्या शब्दांचं आणि आयुष्याचंही आंदोलन केलं. साहित्यातील सर्व प्रकार समर्थपणे हाताळले आणि साहित्याचंच हत्यार करून समाजव्यवस्था बदलण्याचा प्रयत्न केला. अण्णा भाऊंसमोर दोन शत्रू होते. वर्ग आणि वर्ण. या महाभयंकर शत्रूंशी दोन हात करण्याकरता त्यांनी कार्ल मार्क्स आणि डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांच्या विचारांचा खूप वापर केला. साहित्याचा उद्देश रंजन नसून तो समाजपरिवर्तन करण्याचा असतो. स्वातंत्र्य, समता आणि बंधुता या मूल्यांच्या संवर्धनासाठी असतो. अन्यायाच्या प्रतिकारासाठी असतो हेच अण्णा भाऊ सांगत राहिले. लिहीत राहिले. माणूसकेंद्री साहित्यामुळे ते खूप लवकर वैश्विक साहित्यिक बनले.

ज्या साहित्यात अनेक वर्षे देव, धर्म, दैव नायक होते, तेथे अण्णा भाऊंनी माणसाला नायकत्व बहाल केले. त्याच्या लढायांना नायकत्व बहाल केले. एवढे करूनही इथल्या अतिगामी विचारांनी अण्णा भाऊ साहित्यिक होते हेच मान्य केले नाही; पण नव्या काळाने, नव्या पिढीने, परिवर्तनवादी बनू पाहणाऱ्या समाजाने मात्र त्यांना साहित्यरत्न, साहित्यसम्राट आणि वैश्विक साहित्य बनवले. अण्णा भाऊ थोर साहित्यिक होते यासाठी आता सडीक व्यवस्थेच्या प्रमाणपत्राची गरज राहिलेली नाही. देशभर, जगभर अण्णा भाऊंच्या विचारांवर अभ्यास सुरू आहे. 'अण्णा भाऊ : व्यक्ती आणि साहित्य' हा महाग्रंथ त्यातलाच एक भाग आहे. अनेक अभ्यासकांनी अनेक कॅमेरे लावून अण्णा भाऊंच्या उदंड कर्तृत्वाला पकडण्याचा एक प्रयत्न म्हणजे हा ग्रंथ आहे. हा प्रयत्न अधिक खोल, अधिक रूंद, अधिक गंभीर व्हावा. निदान यापुढे तरी व्हावा अशी माझी अपेक्षा आहे. तरीही एक मोठा प्रकल्प पूर्ण करणारे संपादक डॉ. राजकुमार मस्के आणि डॉ. लहू वाघमारे यांना द्यावे तेवढे धन्यवाद कमीच आहेत. अण्णा भाऊंकडे पाहण्याची आणखी व्यापक दृष्टी त्यांना लाभो या सदिच्छेसह!

उत्तम कांबळे

ज्येष्ठ साहित्यिक व समीक्षक

ISBN 819374770-4
9 788193 747704

युगप्रवर्तक
प्रकाशन